IMPACT FACTOR 5.473(SJIF)
UPA NATIONAL E-JOURNAL
Interdisciplinary Peer-Reviewed Indexed Journal
Volume -8 : Issue-1 (February-2022)
ISSN 2455-4375

साठोत्तरी हिंदी ग़ज़लों में सौंदर्य

डॉ. मिनाक्षी वाणी
हिंदी विभागाध्यक्षा
एल.ए.डी. अन्डॅ श्रीमती आर.पी
हिला महाविद्यालय शंकरनगर
नागपुर

सारांश –

ग़ज़ल मुल्ता फारसी ऊर्दू की एक लोकप्रिय विधा है। ग़ज़ल के प्रारंभिक विषय प्रेम –श्रृंगार एवं मदिरा तक ही सीमित था, किंतु समय के साथ ग़ज़ल की परिधि को तोड़कर मानव जीवन के प्रत्येक अंग का स्पर्ष करने लगा है। ग़ज़ल के वैविध्यपूर्ण रूप को देखते हुए सौंदर्य की धरातल पर उतारने का प्रयास किया है।

प्रस्तावना –

हिंदी साहित्य के प्रारंभ से ही काव्य के विविध रूप देखने मिलते है। जैसे जैसे हिंदी साहित्य का विकास होता गया, वैसे वैसे हिंदी साहित्य में विविध विधाओं उद्‌गम होता हुआ दिखाई देता है। प्रारंभिक काल में आध्यत्मिक रचना अधिक मात्रा में थी। जिनके विषय हमारे पौराणिक ग्रंथ के नायक नायिका हुआ करते थे। जिसमें समय के अनुरूप विषयों में परिवर्तन भी देखने मिलता है। आगे गद्यात्मक रचना एंव किसी देवी देवता को न लेकर सामान्य मनुष्य को केंद्र में रखकर साहित्य लिखा जाने लगा। जिसमें कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक, ग़ज़ल आदि प्रखर रूप में दिखाई देने लगा।

ग़ज़ल मुल्ता फारसी ऊर्दू की एक लोकप्रिय विधा है। इसका जन्म सामंती युग में फारसी भाषा में बताया गया है। ग़ज़ल के प्रारंभिक विषय प्रेम –श्रृंगार एवं मदिरा तक ही सीमित था, किंतु समय के साथ ग़ज़ल की परिधि को तोड़कर मानव जीवन के प्रत्येक अंग का स्पर्ष करने लगा है। 10 वीं षताब्दी में ईरान में रौनकी नामंक एक अन्य कवि द्‌वारा सर्वप्रथम इस विधा का प्रयोग किया गया तो कुछ विद्‌वानों का मानना है कि सामंती काल में बादषाहों की प्रषंसा में जो कसीदे लिखे जाते थे, वह काव्य का एक टुकड़ा आगे कसीदे से तष्बीब और तस्वीर के अनुसार अरब में ग़ज़ल नामक एक आदमी था। जिसने अपनी सारी उम्र इष्क करने में बिता दी, उसके बारे में यह भी प्रचलित है कि वह हमेंषा इष्क हुस्न की बातों को काव्य पंक्तियों में प्रस्तुतकर्ता था। आगे वही ग़ज़ल के रूप में प्रचलित हुई। ग़ज़ल मानव मन की पीड़ा को वाणी देने वाली गेय काव्य की लोकप्रिय विधा है। जिसमें थोडे से षब्दों के माध्यम से किसी बात को अत्यंत प्रभावषाली रूप में अभिव्यक्त करने की क्षमता होती है। ग़ज़ल अरबी भाषा का षब्द है जिसका मूल अर्थ ''सुखन अज जनाना'' अर्थात नारी के सौंदर्य का वर्णन तथा नारी से बातचीत''[1]

''ग़ज़ल षब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ को विविध विद्‌वानों ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। फारसी षब्दकोष के अनुसार ग़ज़ल औरतों के बारे में तथा उनके इष्क के संबंध में बाते करते है, और वह बात जो औरत तथा उनके सौंदर्य की तारीफ में कहीं जाए।[2]

डॉ. नेहा कल्याणी जी के लिखित पुस्तक में आगे बताते है कि रामनरेष त्रिपाठी ग़ज़ल को जवानी का हाल बयान करनेवाली, जिसमें माषूक की संगत एवं इष्क का जिक्र करनेवाली अभिव्यक्ति मानते है। फारसी और उर्दू में श्रृगांर रस की कविता का एक प्रकार विषेष ग़ज़ल जिसमें प्रमिका से वार्तालाप एवं पाँच षेर स्वंतत्र होते है, अपने आप में परिपूर्णता को अभिव्यक्त करता है। हर एक षेर का मजमून अलग

होता है। पह पहला षेर मतला होता है। जिसका षायर रदिफ, काफिया की पांबंदी करता है, और षेर जिसमें षायर अपने उपनाम का प्रयोग करता है। वो मक्ता कहलाता है।

ग़ज़ल में सौंदर्य को उभार कर उसे प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे है। सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है मन के भीतर की वस्तु है। छायावादी कवि जयषंकर प्रसाद के कामयनी के लज्जा सर्ग में सौंदर्य का ईष्वर का वरदान बताया गया है। जिसमें हर व्यक्ति को अपनी खुद की अलग पहचान है। वह चाहें सुंदर हो या कुरूप अर्थात् सौंदर्य का रिष्ता बहुत कुछ हमारी इंद्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव से है।

मानक हिंदी कोष के अनुसार सुंदर षब्द की उत्पत्ति सुंद +अर से की गई है। 'नद' धातु से भी 'सुंदर' षब्द की व्यत्पत्ति मानी गई है। इस व्यत्पत्ति के अनुसार सौंदर्य को आनंददायक माना जाता है तथा इसी के आधार पर 'नंदतिक षास्त्र' को 'एथलेटिक्स' का पर्याय भी माना जाता है। सौंदर्य षब्द को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है।[3]

जैसे– आचार्य विश्वनाथ ''रस चमत्कार है और चमत्कार ही आनंद अर्थात् सौंदर्य है''। उसी तरह हिंदी के महान साहित्यकार विद्वान आचार्या रामचंद्र षुक्ल की परिभाषा ''सौंदर्य बाहर की वस्तु नहीं है भीतर की ही वस्तु है। कुछ रूप, रंग की वस्तुएँ ऐसी होती है, जो हमारे मन में आते ही थोडी देर के लिए हमारी सत्ता पर अधिकार कर लेती है। कि उसका ज्ञान ही हवा हो जाता हैं और उन वस्तुओं की भावना के रूप में परिणित हो जाता है। हमारी सत्ता तदाकार परिणित हो सौंदर्य है।''[4]

बामगार्टन जर्मन के दार्षनिक विचारक है। सौंदर्यषास्त्र के अधिष्ठाता एवं पितामह माने जाते है। इन्हें आधुनिक 'सौंदर्यषास्त्र' का जन्मदाता भी माना गाया है।

Father of Modern Aesthetics.

बामगार्टन के कला के अध्ययन को सर्वप्रथम सौंदर्यषास्त्र के नाम से पुकारा तथा इसे एक स्वंतत्र विज्ञान के रूप में स्थापित किया है। बामगार्टन के अनुसार सौंदर्य की परिभाषा –

"The appearance of perfection or perfection odious to taste in the wide sense, is beauts ." [5] उपयुक्त षब्दकोषों और विद्वानों की सौंदर्य की परिभाषा का अध्ययन कर साठोंत्तरी हिंदी गजलों में सौंदर्य को खोंजने का प्रयास कर रहें है। जिसमें मानवी सौंदर्य नारी सौंदर्य अनुभूति सौंदर्य प्रकृति सौंदर्य आदि।

नारी सौंदर्य –

ग़ज़ल के प्रारंभिक रूप को अगर देखा जाये तो नारी सौंदर्य, श्रृंगार एवं माषूका के अनेक रूपों का वर्णन ग़ज़लों में देखने मिलता है। षायर कभी अपनी प्रियतमा के रूप का वर्णन करता है, तो कहीं माषूका के बेवफा को अभिव्यक्त कर अपनी हृदय की पीड़ा को वाणी देता था। ऐसे ही साठोत्तरी ग़ज़लकारों ने भी नारी के विविध पैलूओं को स्पर्ष करने का प्रयास किया हैं।

साठोत्तरी ग़ज़लकारों में उदय षंकरसिंह उदय का अपना एक विषेष स्थान रहा है वे अपनी ग़ज़लों में नारी की आदर्ष प्रतिमा हमारे सामने प्रस्तुत करते है। जैसे –

''बादलों –सा बेमुरव्वत है पुरूष सच
धैर्य धरती–सी धरी सच नारीयाँ हैं'' [6]

कृष्ण षलभ जी ने आदर्ष पौराणिक नारीओं के उदाहरण देकर नारी को प्यार देने वाली त्याग करनेवाली आदर्ष नारी सौंदर्य को अपने ग़ज़लों में अभिव्यक्त किया है। जैंसे –

''राधिका, सीता कभी श्रध्दा, कभी बन उर्मिला
प्यार के आदर्ष की सौंगात है लडकी'' [7]

प्रकृती सौंदर्य –

हिंदी साहित्य में पृथ्वी पर दिखने वाले सभी उपादानों का कवि साहित्यकार अपने काव्य में साहित्य में प्रयोग करता है। वैसे हि ग़ज़लों में भी ग़ज़लकारों ने प्रकृति सौंदर्य के सभी उपादानों को अपनाकर ग़ज़लों में बांध दिया है।

डॉ. अजय प्रसून की 'किन्तु प्यासा ही रहा' ग़ज़ल में प्रकृति सौंदर्य के दर्षन होते है। जिसमें प्रकृति सौंदर्य का मानविकरण करने का प्रयास यहा दिखाई देता है। जैसे –

''मैं कभी नदीया, कभी झरना, कभी बादल बना
किन्तु प्यासा ही रहा, हरगिज न की याचना'' [8]

दिनेष षुक्ला जी के ग़ज़ल में भी प्रकृति के दर्षन होते है।

''परिदें जब उडे तब, तपते आसमान मिले
ये जंगल अब भी घटाओं की बात करता है।'' [9]

अनुभूति सौंदर्य –

ग़ज़लकार अपने हृदय के भाव, पीड, वेदना अपनी अनुभूति सौंदर्य को भी ग़ज़लों में उभारने का प्रयास करता है। वैसे ही डॉ. अषोक गुलषन जी की ग़ज़ल में एक प्रेमिका के बदल जाने के भाव को अपने अनुभूति सौंदर्य के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास यहा किया है। जैसे –

''हम सदा सजते रहे, चन्द ख्वाबों की तरह
और तुम बदला किये को इरादों की तरह
दिल का दर्पन था तुम्हारे वास्ते जान–ए–जिगर
तोड डाला तुमने आखिर दोस्त वादों की तरह'' [10]

हास्य सौंदर्य –

साठोत्तरी हिंदी ग़ज़लकारों के ग़ज़लों में राजनितीक नेताओं के नीति उनके षड़यंत्र को उभारने का प्रयास किया है। तो कहि कहिं उनकी नीति कैसे हंसी का कारण भी बन जाती हैं । उसी का जीता जागता प्ररूप ग़ज़लों मिलता है। जैसे –

सिंहासन की षोभा थे वे, राज चलाया मंत्री ने
राजा होकर रहे विदूषक, जीवित एक मजाक रहे [11]

राज्य को चलाने वाले आज विदूषक बन गया है। ये ग़ज़ल में हास्य सौंदर्य को अभिव्यक्त किया है।

भाव सौंदर्य –

हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में अनेक विचारों भावों को प्रखर रूप में प्रकट करने का प्रयास किया है। षायद ही कोई विधा हो जहाँ भावओं का प्रयोग न किया गया हो। वैसे ही साठोत्तरी हिंदी ग़ज़लकारों के ग़ज़लों में अधिक गहन रूप में भाव सौंदर्य को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। जिसमें हृदय की पीड़ा, वेदना, तकलिफ के भाव ग़ज़लों में अभिव्यक्त हुआ है। जैसे –

पिता की ये मजबूरीयाँ, दहेज के लिये
बनी हैं बोझ बेटियाँ दहेज के लिए
जष्न क्या मनाए कोई बाप बेटी का
मर रही हैं बेटियाँ दहेज के लिए [12]

पिता के हृदय के भाव, पीड़ा, वेदना को ग़ज़ल में उभारने का प्रयास किया गया है।

राजनीति सौंदर्य–

हिंदी साहित्य में राजनीतिक को विषेष स्थान रहा हैं। धूमिल, रघूवीर सहाय के साहित्य मे राजनीति पर करारा व्यंग किया गया। उसी तरह साठोंत्तरी ग़ज़लों में भी राजनीति सौंदर्य को वाणी देने का कार्य किया हैं।

जिस दिन से राजनीति ने अपना लिया उन्हें
उस दिन से, वे भी चोर उचक्के नहीं रहें
जो लोग आम जन से निकले कर बने थे खास
अब वे भी आम लोंगों के अपने नहीं रहे [13]

आध्यात्मिक सौंदर्य –

मनुष्य ऐसा जीव है, जिसे ईष्वर से अलग करना बहुत ही मुष्किल है। जन्म से मृत्यू तक हर समय ईष्वर से जुडा हुआ है। वह जब सबसे अधिक निराष हताष होता है तब उसे तारनेवाला मात्र ईष्वर एकमात्र है। कही वह ईष्वर की सत्ता को स्विकार करता है तो कही विरोध करता हैं। दोनों अनुभूतियों को ग़ज़लकारों ने अपने ग़ज़लों में स्पष्ट किया है। जैसे –

मंदिर के गुंबदों स अब न आस है कोई
निःसार स्वर प्राथना के हो गए हैं हम [14]

मानविय सौंदर्य –

साहित्यकार अपने साहित्य में मानव को केंद्र में रखकर अपने भावों को प्रकट करता है। वैसे ही ग़ज़लकारों ने भी मानव के बदलते रूप को अपने ग़ज़लों में उभरने का प्रयास किया है। मानव आज अपनी सीमाएं लांघ चुका है, वह मानव न होकर दान रूप में परिवर्तित हो चुका है। यह दृष्टी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

आज तो मानव दानवता की, सीमायें ते लांघ चुका है
नैतिकता का सारे जग में, जहाँ भी देखों ऱ्हास मिलेगा
धर्मों के घर में तो निषिदिन, निष्चित ही उपवास मिलेगा [15]

समाजिक सौंदर्य –

सामान्य मनुष्य का होनेवाला षोषन और पीड़ा को देखकर कवि, साहित्यकार तिलमिला उठते है। यही यथार्थ स्थिति समाज की ग़ज़लकार अपनी ग़ज़लों में उभारने का प्रयास किया है। जहाँ मनुष्य को दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती वहाँ उसके मरने पर गंगाजल पिलाने के सामाजिक सौंदर्य को अभिव्यक्त किया है।

पानी की बूंदों खातिर, बूढे ने दम है तोडा
गंगाजली से मैय्यत का, स्नान हो रहा है
हद हो गयी है, अब तो, उम्मीद की यहाँ पर
वादों की रोटियाँ खा, अब हाथ धो रहा है। [16]

निष्कर्ष –

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि साठोत्तरी हिंदी ग़ज़लकारों ने जीवन के विविध पैलूओं को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जिसमें नारी प्रेमिका प्रियसी महेबूबा आादि विविध नाम उल्लेख मिलता है। पौराणिक ग़ज़लों को अगर देखेगे तो नारी ही केंद्र में रही किंतु जैसे जैसे विकास होता गया विषय में भी वैविध्यता दृष्टिगत होती है। समाज की बेहाल स्थिति, पीड़ीत, षोषित जनता धर्म के प्रति अनास्थ, मानव की बदलती नीति आदि विषयों में सौंदर्य के खोजने का प्रयास किया हैं। जिसमें मानविय सौदर्य, भाव सौंदर्य, सामाजिक सौंदर्य,आध्यात्मिक सौंदर्य आदि को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

संदर्भ ग्रंथ –

- साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल – विनोदकुमार उइके 'दीप' प्रस्तावना पृष्ठ क्र. 1
- हिंदी साहित्य प्रदेय का मूल्यांकन डॉ. नेहा कल्यानी पृष्ठ क्र. 13
- मनक हिंदी कोष सं. रामचंद्र वर्मा (पाँचवा खंड) पृष्ठ क्र. 42
- सौंदर्य, रस एवं संगीत – प्रो. स्वंतत्र षर्मा पृष्ठ क्र. 46
- सौंदर्य और सौंदर्यषास्त्र डॉ. जगदीष सिंह मन्हास, पृष्ठ क्र. 23
- 'रेत पर' उदय षंकरसिंह उदय, साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल–विनोदकुमार उइके 'दीप' पृष्ठ क्र. 17
- 'लडकी' कृष्ण षलभ वही पृष्ठ क्र. 26
- 'किन्तु प्यासा ही रहा' डॉ. अजय प्रसून पृष्ठ क्र. 1

- 'बात करता है' दिनेष षुक्ल पृष्ठ क्र. 45
- 'ख्वाबों की तरह' डॉ. अषोक गुलषन पृष्ठ क्र. 10
- 'गंगा के तेराक रहे' चंद्रसेन विराट पृष्ठ क्र. 33
- 'दहेज के लिए' सुश्री कमलेष तिवारी पृष्ठ क्र. 22
- 'भरोसे नहीं रहे' जहीर कुरेषी पृष्ठ क्र. 35
- 'घर में अपने ही' डॉ. जोगिंदरकौर महाजन पृष्ठ क्र. 40
- 'जीवन चंद्र' दर्द होषंगाबादी पृष्ठ क्र. 44
- 'चुपचाप रो रहा' दीनानाथ षुक्ल पृष्ठ क्र. 46